उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में मुर्गी पालन

विवेक प्रताप सिंह, मयंक दूबे, संजय कुमार विश्वकर्मा और अनील कुमार[1]

मुर्गी पालन स्वरोजगार का सशक्त विकल्प है। मुर्गी पालन में अधिक संसाधनों की आवश्यकता नही होती है। कृषक कम खर्च में नीचे दी गयी तकनीकी अपनाकर सफल मुर्गी पालन कर सकते हैं। उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में जोतो का आकार छोटा है जिस कारण यहाँ के कृषक कृषि की नवीनतम तकनीकी जानकारी होने पर भी कुछ ज्यादा लाभ अर्जित नहीं कर पाते हैं। वर्ष भर हरे चारे की अनुपलब्धता पशुपालन में एक बड़ी बाधा है। ऐसी स्थिति में मुर्गी पालन स्वरोजगार का सशक्त विकलप है। मुर्गी पालन में अधिक संसाधनों की आवश्यकता नही होती है। कृषक कम खर्च में नीचे दी गयी तकनीकी अपनाकर सफल मुर्गी पालन कर सकते है।

आवास व्यवस्था व उपकरणः

- मुर्गी घर सूखी व ऊँची जगह पर बनायें इसके लिए पथरीली जमीन उपयुक्त है।
- मुर्गी घर की छत ढलवां बनायें, छत के लिए टिन, सीमेंट की चादर छप्पर या खपरैल का उपयोग किया जा सकता है।
- फर्श की ऊँचाई बाहर की सतह से 1 फीट ऊंची होनी चाहिए।
- मुर्गी घर को इस दिशा में बनायें कि मुर्गियों को धूप व उचित प्रकाश मिल सके।
- फर्श मजबूत व समतल हो तथा उस पर लगभग 4 इंच मोटी बिछावन, धान की भूसी अथवा लकड़ी का बुरादा हो।
- यह बिछावन सूखी होनी चाहिए, जिसे सप्ताह में 2 बार ऊपर नीचे पलट देना चाहिए।
- यदि माँस उत्पादन हेतु मुर्गी पालन हो तो प्रति मुर्गी 1 वर्ग फुट स्थान चाहिए। अण्डे वाली मुर्गी के लिए 2.5 वर्ग फुट स्थान की जरूरत पड़ती है।
- प्रति ब्रायलर को खाने के बर्तन में 2 इंच जगह तथा पानी के बर्तन में 1 इंच जगह की आवश्यकता होती है।
- बर्तन ऐसे होने चाहिए जिन्हे साफ करना आसान हो ताकि प्रतिदिन सफाई की जा सके।

[1] कृषि विज्ञान संस्थान काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।